पाठ 14. पिता ने सिखाया संगीत

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मक विचार संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे चीज़ों व घटनाओं को देखने और करने का अभिनव तरीका अपना सकें। यह संस्मरण विश्वविख्यात कथक कलाकार बिरजू महाराज जी द्वारा लिखा गया है। इस संस्मरण के माध्यम से यह संदेश मिलता है कि जीवन को समझने और सीखने के लिए हमारे विचार किस प्रकार के होने चाहिए।

पाठ का सार

बिरजू महाराज का जन्म 4 फरवरी सन् 1938 को हुआ था। बचपन से ही उन्होंने नृत्य व संगीत सीखना शुरू कर दिया था। अपने पिता या चाचा के साथ जहाँ कहीं भी मौका मिलता, वे नृत्य सीखने जाते। जब वे मात्र दस वर्ष के थे, तभी उनके पिता जी की मृत्यु हो गई। उसके बाद उनकी पढ़ाई छूट गई तथा वे पूरी तरह से कथक में ही रम गए। चौदह वर्ष की उम्र में वे 'संगीत भारती' में नृत्य सिखाने लगे। इसके बाद वे 'भारतीय कला केंद्र' चले गए तथा वहाँ कथक सिखाने लगे। उनका स्वभाव शांत प्रकृति का था। उन्हें बचपन में पतंगें उड़ाने का शौक था जिसके कारण उन्हें माँ से डाँट भी खानी पड़ती थी। बिरजू महाराज हम सभी के बीच अति लोकप्रिय हैं। कथक नृत्य-कला में उनका योगदान सराहनीय है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  संगीत की हमारे जीवन में क्या उपयोगिता है और संगीत सीखने में लगन की ज़रूरत होती है, इसके बारे में चर्चा करें। बिरजू महाराज की जीवनी भी बताएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - उदाहरण देकर कर्ता, कर्म और क्रिया की पहचान कराएँ। वाक्य में उनका क्रम भी बताएँ। कुछ वाक्य देकर उनमें इन तीनों की पहचान कराएँ।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - गीत, संगीत, नृत्य के बारे में अलग-अलग चर्चा करें। बच्चों को कथक, कथकली, भरतनाट्यम और ओडिसी के बारे में इंटरनेट या पत्रिकाओं के माध्यम से ज्ञान दें।